| | | |
|---|---|---|
| व्युच्छिष्यन्-न्ती-ती, | उच्छयिष्यन्-न्ती-ती, | उचिच्छिषिष्यन्-न्ती-ती ; |
| — | व्युच्छयमानः, | व्युच्छयिष्यमाणः ; |
| [1]व्युट्-व्युशौ-व्युशः ; | — | — |
| [2]व्युष्टः-ष्टम्-ष्टवान्-[A]व्युष्टा, | व्युच्छितम्-तः-तवान्, | उचिच्छिषितः-तवान् ; |
| उच्छः, | उच्छः, | उचिच्छिषुः, उचिच्छयिषुः; |
| व्युच्छितव्यम्, | व्युच्छयितव्यम्, | उचिच्छिषितव्यम् ; |
| व्युच्छनीयम्, | उच्छनीयम्, | उचिच्छिषणीयम् ; |
| व्युच्छयम्, | उच्छयम्, | उचिच्छिष्यम् ; |
| ईषदुच्छः-दुरुच्छः-सूच्छः ; | — | — |
| व्युच्छयमानः, | उच्छयमानः, | उचिच्छिष्यमाणः ; |
| उच्छः, | उच्छः, | उचिच्छिषः ; |
| उच्छितुम्, | व्युच्छयितुम्, | उचिच्छिषितुम् ; |
| [B3]उष्टिः-उच्छा[4], | व्युच्छना, | उचिच्छिषा, उचिच्छयिषा; |
| उच्छनम्, | उच्छनम्, | उचिच्छिषणम् ; |
| उच्छित्वा, | उच्छयित्वा, | उचिच्छिषित्वा ; |
| व्युच्छय, | व्युच्छय, | व्युचिच्छिष्य ; |
| उच्छम् २, उच्छित्वा २, | उच्छम् २, उच्छयित्वा २, | उचिच्छिषम् २ ; उचिच्छिषित्वा २. |

## (99) "उछी विवासे" (VI-तुदादिः-1295-सक. सेट्-पर.)

'शशपोरुञ्छतीत्युञ्छे स्वरभेदाद् द्विरुच्यते। उच्छतीति विवासे स्यात् इदितोऽनिदितस्तयोः ॥' (श्लो-55) इति देवः।

---

1. 'च्छ्वोः शूड्—' (6-3-19) इति शः। पदान्ते 'व्रश्च—' (8-2-36) इत्यादिना षत्वे जश्त्वे च रूपम्।
2. 'श्वीदितो निष्ठायाम्' (7-2-14) इति इट् न। 'व्रश्चभ्रस्ज–' (8-2-36) इति षत्वम्।
3. बाहुलकात् क्तिन्। षत्वम्। 'व्युष्टिः फले समृद्धौ च' इत्यमरः।
4. 'गुरोश्च हलः' (3-3-103) इति अप्रत्ययः।

A. 'रजन्यां व्युष्टायामुषसि जनयामास तनयम्।' इति क्षीरतरङ्गिण्यामुपात्तः श्लोकः।

B. "अहूर्णचिताः परिमूर्च्छितव्रताः स्फूर्णमिया अप्रयुशः कृतोञ्छनाः। भजन्ति यां व्युष्टिमतोऽपि भूयसीं व्रजन्ति यत् व्रजनमात्रतो जनाः ॥" धा. का. 1-29.